Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

नारी उत्पीड़न और समाज़

डॉ प्रीतम कुमारी
विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान विभागए राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋविकेश, उत्तराखण्ड, भारत

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number: 01-04

Publication Issue :
January-February-2022

Article History
Accepted : 01 Jan 2022
Published : 10 Jan 2022

परिचय :–

धन्य है आज का भारत जहॉ नारी, देवी दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती , मॉ, पत्नी, पुत्री, बहन ही नहीं नानी, दादी, मौसी, चाची, अनेक विशेषणों से वही पुरूष वर्ग संबोधित ही नहीं करते वरन् पूजा भी करते हैं ।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता''

पूरा भारत दीप जला कर देवी के रूप, साज – सज्जा से सुशोभित करता है ।बेटा जब बुलाए मॉ को आना चाहिए, तब आज का भारत पाश्चात्य परिदृश्य में निमग्न है और मातृत्व, भ्रातृत्व की गरिमा को गरक कर रहा है। वर्तमान परिवेश में होने वाली नारी उत्पीड़न घटनाऍ होने पर हमारे शासनकर्ता कहते हैं :–

– कभी उम्र बढा दो ।
– कभी उम्र घटा दो ।
–कभी महिलाओं के पोशक भाड़काऊ होने पर प्रतिबंध लगा दो।
–सजा करवा दो ।
–उसकी पढाई रोक देना चाहिए ।
–परदा में रहने दो ।
– सुरक्षा का प्रबन्ध करें ।

पुत्री को पिता, पत्नी को पति, बहन को भाई
अब बताऍ भाई कौन पति कौन, पुत्र कौन ।

नारी उत्पीड़न का मूल कारण

पुरूषत्व का अहंकार :– आज का भारत अपना पुरूषत्व का विकृत कर रहा है । अन्तर में दुरात्मा प्रवेश कर रहा है, जो उस दुराचारी बना डाला और उनके अन्तर का परमात्मा विक्षुब्ध है ।

देश की शासन सत्ता, प्रशासन वर्ग निर्बलता का भी मापदण्ड खो चुका है। तब मौन दर्शक भी नहीं बन रहा है, केवल घडियाल ऑसू बहा रहा है ।

ऐसी घटनाऍ पहले भी हुआ करती थी जैसे

- सतयुग में नारी देवी थी– ''यत्र पूज्यते नारी ,तत्र रमन्ते देवता''
- त्रेता में नारी भगिनी, भार्या,माता, जहॉ नारी उत्पीड़न की प्रकिया , तभी तो रावण सीता को हठात उठकर पंचवटी से लंका ले गया। अबला बिलाप करती परूष को सहायता हेतु एक पक्षी आया था ।
- द्वापर में रूक्मिणी हरण – महाभारत के पात्र सबल प्रमुख भीष्म पितामह जैसे योद्वा, धर्मनिष्ठा, ज्ञाता नारी हरण किया । नारी विलाप करती रही पर उनका प्रतिकार कर सकने में समर्थ पुरूष भी प्रतिवाद न कर सकी और उन्हीं के समक्ष दौपदी का चिर हरण हो गया ।
- मध्यकाल में महाराजाओं का भोग्य बनी , मनोरंजन का माध्यम बनी ।
- मुगलकाल से नारी का शोषण, हठात होना प्रारम्भ हो गया। राजा महाराजाओं के लिए शोभा, मनोरंजन के रूप में, कुछ हठात ,कुछ प्रलोभन और कुछ मनः स्थिति का विकार वश वेश्या बनी ।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

- बौद्व, जैन काल में नारी , भिक्षुण, सन्यासी, स्वेच्छा से या परूष के अत्याचारवश,मंदिरों का परिचारिका बन गयी । शनैः– शनैः गलत क्रिया भी प्रक्रिया में तब्दील होता गया, धीरे –धीरे समाज का रूप बदलता गया और विचारधारा में पशुता आग की लै की तरह धीरे– धीरे सम्पूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन लाया और '' नारी तुम केवल यश हो, विशवास रजत –पट पर'' । उसके सम्बंध में महाकवि जायसी ने पद्मावती को चित्रण किया। कालीदास का मेघदूत,अभिज्ञान शकुन्तलम जैसे ग्रन्थों में नारी की अवस्था का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है ।

इन सब उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि नारी उत्पीड़न में पुरूषत्व का अहंकार बहुत बड़ी समस्या है। अन्तर यही है कि प्राचीन में एक द्रौपदि का चिरहरण से महाभारत में कौरव नाश हुए,एक सीता हरण से राक्षस कुल नाश हुआ था परन्तु आज प्रतिदिन चिरहरण हो रहा है, अनेक रावण है परन्तु एक राम, कृषण पैदा होता नहीं नजर आ रहा है। इसलिए इन मुदों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ।

नारियों का योगदान –व्यक्ति निमार्ण से लेकर विश्व निर्माण तक महिलाओं के महत्व और भूमिकाओं को हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं । परिवार जो समाज की सबसे बड़ी इकाई है ।चाहे संयुक्त हो या एकाकी उसकी जीवन पद्वति तथा सामाजिक व्सवहार उस परिवार की प्रमुख महिला के संस्कारों से प्रतिबिम्बित होते है । परिवार के हर सदस्य के संस्कारों को परिस्कृत करने की प्रत्सक्ष या परोक्ष जिम्मेवारी उसी पर होती हैं। इतिहास साक्षी है कि विश्व के महान से महान चरित्रों चाहे महाराजा शिवाजी हो या लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गॉधी हो या लाला लजपतराय, इन सभी को गढ़ने में माताओं (महिलाओं) का ही सबसे बड़ा हाथ रहा है। नारी, सेवा ,ममता ,कल्याण, त्याग और उच्च मूल्यों की सजीव प्रतिमा हैं। वर्तमान दौर में उसके जीवन को यदि ध्यान साधना और अभ्यास का सम्बल देकर विकसित और परिष्कृत कर दिया जाय तो उसके स्नेह , संग में विनयशील, निस्वार्थी कर्तव्यनिष्ठा और विशाल दृष्टिकोण वाले उदारमना व्सक्ति निर्मित हो सकता है । आज इसकी आवश्यकता हैं। इसके लिए नारी का आध्यात्मिक और नैतिक सशक्तिकरण चाहिए । आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सशक्तिकरण तो नैतिक सशक्तिकरण की परछाई मात्र है।

नारीशक्ति के वजाय – उसे विज्ञापन का साधन तथा उसकी शारीरिक सुन्दरता को निम्न स्तर की कमाई का साधन बना दिया हैं। उसका स्थान–स्थान पर शारीरिक शोषण होता है और वह स्वयं भी अपनी अस्मिता को भूल परूष के कामी हथकण्ड़ों का श्किार होकर वासना की गुडिया बन गई है । जब तक हमारी मान्यताऍ नहीं बदल सकती और जब तक मान्यताऍ नहीं बदलती तब तक दृष्टिकोण नहीं बदलता और जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलता तब तक सशक्तिकरण हो नहीं सकता।

सदियों से शोषित नारी – नारी के लिए सशक्तिकरण एक प्रकार से घाव पर लगाई जाने वाली मलहम है परन्तु मलहम तभी काम करती है जब पहले घाव को पोछ दिया जाए मवाद से ढके घाव पर मलहम कोई असर नहीं करती । नारी के प्रति

अबला , भोग्य और दूसरे दर्जे की इसप्रकार का दृष्टिकोण और धर्मशास्त्रों में उसको अपमानित करने वाले निन्दा सूचक तथा अन्याकारी शब्द और वाक्य ही वह मवाद है जिसको पोछा जाना आवश्यक है । उदाहरण के लिए उसे नरक का द्वार कहना उसके साथ घोर अन्याय ही तो है जबकि नर –नारी दोनों मिलकर ही नरक का द्वार बनते है ।

पुराने मान्यताओं के साथ–साथ वर्तमान काल की भौतिकवादी ऑख ने भी नारी के ईश्वरीय गुणो को पहचानने की ज्ञान दी हैं।

नशा में शराब का सेवन कललुग में मनुष्य के प्रकृति में बदलाव हुआ ,उनकी खान–पान में भी शराब का सेवन किया जाने लगा जिससे परूषो की पुण्य आत्मा मर्ज हो गया है सभी मनुष्यों में प्रेम, आनन्द,सुख, शांति ज्ञान, पवित्रता का गुण पाया जाता हैं मनुष्य देवत्व गुणों को भूलकर आसुरी अवगुणों का धारण कर लिया हैं। जिससे पुरूषों में पुण्य आत्मा विलुप्त हो गया और पापात्मा जागृत होने में आसानी हुई और नशे के कारण पुरूष अपने पुण्यात्मा का बलिदान कर रहे हैं।

आज जितने भी नारी –उत्पीड़न संम्बंधी घटनाऍ हो रही है उसमें दोषी वयक्ति शराब के नशे में ही पाए गए है । अतः हम कह सकते है कि शराब के नशे मे वो अपना विवेक खो देते हैं और वही पूजी जाने वाली नारी को वो हवस के शिकार की दृष्टि से ही देखते हैं।जब घटनाऍ घट जाती है तब उनका नशा

टूटता है और वही इंसान न्याय दिलाने के लिए हंगमा करना चाहते है कानून बनबाना चाहते है । पहले की अपेक्षा आज जो संस्कृति भंग होती जा रही है उसका सबसे बड़ा कारण है ''शराब का सेवन''

पहनाबा– लड़कियों की पश्चिम प्रेरित पोशाक पर आलोचना सही है। हम सब देखते है कि ऑफिस हो या पार्टी, शहरों में पुरूषों के सूट उनके शरीर को पुरी तरह ढकते है जबकि स्त्रियों का योरोपियन सूट ठीक उल्टा होता है।मानो पोशकउनके शरीर को अधिक से अधिक खुला छोड़ने के लिए बनी है । अतः पश्चिम प्रेरित फैशन ने स्त्रियों को कम से कम कपड़े पहनाना सिखाया है यह सत्य है । इसमें अवांछित पृवृतियॉ बढती है । स्त्रियों के शरीर पर कम कपड़े उत्तेजना पैदा करता है जिसके कारण अविवेकी अपनी मर्यादा का भंग कर नारी उत्पीड़न में सहायक हो जाते हैं

अशिक्षा– आजकल शिक्षा का स्तर तो बढा हैं परन्तु यौन शिक्षा की अभी भी सही जानकारी नहीं है। विशेषकर युवा वर्ग के लोग किशोरावस्था में होनेवाले बदलाव की सही जानकारी नहीं प्राप्त कर पाते हैं। इस अवस्था में होने वाले हारमोन के कारण विपरीत लिंग के प्रति होनेवाले आकर्षण के कारण उनकी जिज्ञासा यौन के प्रति बढ़ जाती है जिससे जाने – अनजाने यौन उत्पीड़न कर बैठते हैं। जिसका शिकार निर्दोष नारी हो जाती है और सजा के रूप में दर्द उम्रभर सहना पड़ता है ।

विशेषकर अशिक्षित लडकियों –महिलाओं को छल द्वारा पुरूष अपने शिकंजे में आसानी से कर लेते है।

गरीबी– गरीबी भी नारी उत्पीड़न का एक अहम कारण है। गरीबी के कारण पुरूष, महिलाओं को प्रलोभित कर दिग्भ्रमित कर देते है जैसे– नौकरी का प्रलोभन, आधुनिक रहन सहन के कारण पैसे का प्रलोभन।

आजकल की तिथि में लोगों का रहन–सहन ,दैनिक उपभोग की आधुनिक वस्तुओं की मॉग बढती जा रही है जिसकी पूर्ति के लिए पैसे की ललक में भी वो विवश होकर अपना आप खो बैठते है और नारी को उपभोग की वस्तु बना बैठते है।

मॉडलिंग– आजकल अधिकांश मॉडलिंग में स्त्रियों को ही रखा जा रहा है जिससे पुरूषों का घ्यान अकार्षित होना स्वाभाविक हो गया है, मॉडलिंग में अर्धनग्न अंगों को देखाकर वो अपना पुण्यात्मा को भूल जाते है,उन्हें नारी केवल उपभोग की वस्तु ही नजर आती है।

टेलीविजन एवम इंटरनेट का उपयोग– आजकल युवा वर्ग टेलीविजन एवम इंटरनेट का अधिक उपयोग ब्लू फिल्म देखने,अश्लील विड़ियों एवं यौन संबंधी जानकारी के लिए करने से उनकी मानसिकता विकृत हो जाती है और इन्हीं जानकारी को व्यवहार में लाने के लिए विशेष कर युवा वर्ग नारी उत्पीड़न हेतु उत्सुक हो जातं है ।

नरी उत्पीड़न के समस्यओं का समाधान

1 परूषत्व के अहंकार को दूर करने के लिए हर पुरूष को अपने पुण्यात्मा को जागृत करने की आवश्यकता है।देश की महासभा का अध्यक्ष भी नारी रही है और प्रमुख बिरोधी दल का नेता भी नारी रही है । फिर भी नारी के साथ दूराचार की घटनाऍ बंद नहीं होते दिखाई पड़ रहा हैं।गत 2012 में देश की राजधानी में घिनौना नारीत्व की घटना हुई । सारा देश उबल पड़ा ,पर शासक वर्ग मौन साधे रहा । जब स्थिति भयानक हुई तब भारत सरकार के कान पर जूँ रेंगा ।

पश्चिमी विचारों ,संस्थाओं नारी का अंध नकल करते है, उस हद तक वे उन्ही परिणामों को लाने में सहयोग होते हैं। स्त्रियों के प्रति भोगवादी दृष्टि को समझना चाहिए और पुरूषों को अपने अहंकार पर काबू पाना चाहिए ।

2 शराब, का सेवन बंद :– आज की जो स्थिति है लोग थकावट, गम मिटाने एवं खुशी का इजहार करने के लिए शराब को ही प्राथमिकता देते है,वो उनकी मर्यादा समझते है। उनका कहना है कि पार्टी, शादी ,पिकनिक में शराब रहना आवश्यक समझते है । अतः हमलोग की इस मानसिकता को बदलने की जरूरत है।

इतना ही नहीं जो हमारे रक्षक हैं– पुलिस, नेता ,पदाधिकारी, इनलोगों को निर्णय लेना होगा कि शराब दुकान की लाइसेंस ही नं बने , साथ ही साथ हम सबों को समझने की जरूरत है कि हम सब शराब का सेवन ही न करे , क्योंकि दुकान बन्द करते –करते समय लग जाता है और तब तक घटनाऍ घट जाती है ।

3. मर्यादित पोशाक का सेवन –महिलाओं को अपने इच्छा की पूर्ति करने का अधिकार है। वो अपने मन के अनुसार पोशाक का भी उपयोग कर सकती है परन्तु उसको भी उत्पीडन से बचने के लिए वैसे पोशाकों का उपयोग करना चाहिये जो उनके अस्मत को बचा सके ।

हलांकि वैसी घटनाएँ भी देखी गई है जिसमे भारतीय पोशाक का उपयोग किया गया था,परन्तु फिर भी अपनी सावधानी स्वयं करने की जरूरत है । लड़कियॉ जिन पोशाक के द्वारा अपनी सुन्दरता बढ़ाना चाहती है, वो है उनकी शालीनता एवं भारतीय परिधानों का उपयोग ।

4 शिक्षाः– नारी उत्पीड़न की घटनाएँ केवल अशिक्षित नारी के साथ ही नही हो रही है, शिक्षित के साथ भी हो रही है परन्मु अशिक्षित नारी को प्रलोभन में लाने में आसानी होती है । जैसे – नौकरी ,पैसा , आधुनिक संसाधन हेतु आसानी से बहलाकर नारी उत्पीड़न कर बैठते है ।

अतः नारी को शिक्षित हाने की आवश्यकता है तथा अपना भला समझने की आवश्यकता है। विशेष कर यौन शिक्षा की जानकारी सबो को देना अति आवश्यक है।

5 मॉडलिग– मॉडलिग में नारी अश्लीलता को नहीं रखा जाए ।

6 टेलीविजन एवं इंटरनेट –टेलीविजन एवं इंटरनेट द्वारा ब्लू फिल्म, अश्लील विडियो को नहीं रखा जाय ।

7 सजगता :– वैसे तो उपयुक्त बातों को घ्यान देने की आवश्यकता है परन्तु फिर भी यह देखा गया है कि हर मर्ज का एक दवा है, सजगता । पुरूष या नारी अपने मन पर काबू पा ले ,अपने को सजग कर ले तो काफी हद तक नारी उत्पीड़न में कम करने में मदद मिल सकती है।

मूल्यांकन – पश्चिमी विचारों ,सस्थाओं नारी की अंध नकल करते हैं, उस हद तक वे उन्हीं परिणामों को लाने में सहयोगी होते हैं । स्त्रियों के प्रति भोगवादी दृष्टि भारत की अपनी बीमारी नहीं है, यह समझना चाहिए ।

वस्तुतः दुष्कर्म की बढती घटनाएँ किसी बड़ी गडबडी का लक्षण है ।: दुष्कर्म हमारे जीवनमूल्यों में हो रहे क्षरण से जुड़ा हैं। आज जैसे भी हो पैसा बनाने , अधिकाधिक कमाने और फिर हर तरह से भोग विलास में लिप्त होना ही जीवन का मुख्य उदेश्य बनता जा रहा है । ऐसी स्थिति में अनाचार की घटनाओं पर अलग से चिंता करके हम कहीं नहीं पहुॅचेगे । स्त्रियों के प्रति वस्तुवादी , भोगवादी दृष्टि और नीति – अनीति के प्रति बेपरवाही मूल चिंता हानी चाहिए । श्हरों में हर तरह के विज्ञापन लड़कियों का शरीर बेचते हैं। सिनेमा और टेलीविजन ने उन्हें कोने– कोने तक पहुॅचा दिया है। शहरो में शराब की दुकानें अंधाधुंध खोली गई हैं। दुष्कर्म की आधी से अधिक घटनाओं में उत्पीडन का शराब पीना हुआ पाया गया है। अतः शराबखोरी में वृद्वि का कई तरह के दुराचार से सीध संबंध हैं । यह जानते हुए भी उसे बढावा दिया जा रहा हैं।

शिक्षा को चरित्र निर्माण केन्द्रित करना अनिवार्य है । यदि धर्मचेतन जैसे उचित – अनुचित सदाचार –दुराचार,सुकर्म– कुकर्म के बोध का संचार नहीं होगा , तो किसी बहकते पुरूष को स्वतः रोकनेवाली कौन सी चीज होगी जो किसी स्त्री के साथ बलात की ओर बढ़ता है ।अपराधी को दण्ड देना एक चीज है ,किन्तु लोगो का विवेकहीन होते जाना बिल्कुल दूसरी चीज है।क्या हमारा समाज अपने प्रत्येक सदस्यको यह विवेक देने के प्रति सचेत है । हमारी वर्तमान शिक्षा की सम्पूर्ण सामग्री इसका प्रमाण है कि – उसे इस बिन्दु की समझ ही नहीं रह गई हैं।

स्रोता – टेलीविजन

समाचार पत्र

ऑखो देखी हांल